- स्वामी जी ने शारीरिक शिक्षा पर बल दिया है।
- स्वामी जी ने जन शिक्षा सम्बन्धी विचार पर बल दिया।
- स्वामी जी ने बालक की क्षमताओं के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल दिया है।
- स्वामी जी ने शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के लिए ब्रह्मचर्य पर बल दिया है।
- स्वामी जी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की है।

28.07.21
S.B.Msc-101, Sem-I

रवीन्द्रनाथ टैगोर (Rabindranath Tagore)- Topic

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 6 मई, 1861 को कलकत्ता में हुआ था। इनके पिता प्रसिद्ध धर्म एवं समाज सुधारक महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। गुरुदेव न केवल उच्च कोटि के विद्वान्, बल्कि एक महान् कवि, विचारक तथा महान् शिक्षाशास्त्री भी थे। उन्होंने साहित्य, कला, दर्शन के क्षेत्र में अपनी असाधारण उपलब्धियों से विश्व में भारत का मस्तक ऊँचा किया। गुरुदेव का जन्म एक सम्पन्न जमींदार परिवार में हुआ था। इन्हें सबसे पहले ओरिएण्टल सेमेनरी विद्यालय में भर्ती किया गया।

यहाँ पर उनका मन नहीं लगा इसलिए इनको वहाँ से हटा लिया गया। इसके उपरान्त इन्हें नॉर्मल स्कूल में भर्ती किया गया। इस नॉर्मल स्कूल में वे परम्परागत

ब्रिटिशकालीन शिक्षा प्रणाली के सम्पर्क में आए, उन्हें यहाँ पर इतने कटु अनुभव हुए कि उसी समय उन्होंने शिक्षा प्रणाली में सुधार का संकल्प ले लिया तथा आगे चलकर शान्ति निकेतन की स्थापना द्वारा अपने संकल्प को मूर्त रूप प्रदान किया।

विद्यालय तो वे केवल नाममात्र को गए घर में धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी। अत: उनकी प्रारम्भिक शिक्षा विद्यालय की अपेक्षा घर पर अधिक अच्छी हुई। घर पर ही उन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा प्राप्त की। 1877 ई. में वे कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत गए, परन्तु वहाँ भी इनका मन नहीं लगा और वहाँ से लौट आए।

वर्ष 1901 में इन्होंने बोलपुर के समीप **शान्ति निकेतन** की स्थापना की तथा उसके पश्चात् अपना समस्त जीवन उन्होंने शिक्षा, साहित्य व समाज की सेवा मेंअर्पित कर दिया। उन्होंने राजनीतिक कार्यों में भी सफलतापूर्वक भाग लिया। वर्ष 1919 के उपरान्त राजनीति के कार्यों को करते हुए भी उनकी साहित्य साधना अनवरत् चलती रही। वर्ष 1941 में भारत के इस महान् पुत्र का निधन हो गया।